

पर्यावरण संतुलन और नैतिक जागरूकता

*डॉ. मणिमाला शर्मा

नेचर पत्रिका के अनुसार "पर्यावरणीय नीतिशास्त्र व्यवहारिक दर्शनशास्त्र की एक शाखा है जिसके अंतर्गत पर्यावरणीय मूल्यों की आधारभूत अवधारणा के अध्ययन के साथ-साथ जैव विविधता एवं पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण एवं उसे बनाए रखने के लिए आस-पास के सामाजिक दृष्टिकोण, कार्य एवं नीतियों जैसे मुद्दों का अध्ययन किया जाता है।"

मनुष्य पर्यावरण में अपने अनुरूप परिवर्तन लाने की कुछ सीमा में क्षमता रखता है। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण उत्पन्न समस्याओं के निराकरण हेतु पर्यावरण संरक्षण की महती आवश्यकता महसूस की जा रही है इसी दिशा में पर्यावरण नैतिकता की महत्वपूर्ण भूमिका है।

अरस्तु ने जिस प्रकार प्राकृतिक दर्शन और नैतिक दर्शन में दर्शन का विभाजन किया था, दर्शन का आधुनिक विभाजन सैद्धांतिक दर्शन और व्यवहारिक दर्शन के रूप में देखा जा सकता है जिनमें क्रमशः सिद्धांत और अभ्यास पर जोर दिया जाता है।

व्यवहारिक दर्शन में आचार या नैतिक दर्शन की बात की जाती है जो मूल्य से संबंधित है। अनुप्रयुक्त नैतिकता दर्शनशास्त्र का एक अनुशासन है जो वास्तविक जीवन की स्थितियों में नैतिक सिद्धांत को लागू करने का प्रयास करता है।

व्यवहारिक दर्शन दैनिक जीवन में दर्शन और दार्शनिक तकनीकों का उपयोग है। यह चिंतनशील अभ्यास, व्यक्तिगत दार्शनिक सोच और दार्शनिक परामर्श सहित कई रूप ले सकता है।

पर्यावरणीय मूल्यों के अध्ययन की दिशा में जब हम कदम रखते हैं तो स्पष्ट होता है कि मनुष्य को प्रकृति के साथ सद्भाव में जीना सीखना चाहिए। प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल और आर्थिक विकास के कारण पारिस्थितिकीय समस्याओं की वृद्धि होती है। आर्थिक उन्नति पर्यावरण की कीमत पर मिल रही है फलस्वरूप प्रदूषण में वृद्धि और जैव विविधता में कमी हो रही है।

मनुष्य को अपने पर्यावरण के प्रति सद्भावना बनाए रखने की जरूरत है। मनुष्य को चिंतन करने की आवश्यकता है कि वनों की कटाई, जीवाश्मीय ईंधन का प्रयोग कब तक जारी रखें? पर्यावरणीय दायित्वों को समझ स्वस्थ पर्यावरण को भावी पीढ़ियों को सौंपने के उत्तरदायित्व की दिशा में कार्य करें। सभी जीवों के प्रति सद्भावना, संपूर्ण पर्यावरण के प्रति श्रद्धा और सम्मान हमारे नैतिक जिम्मेदारी है। प्रकृति एवं समस्त प्राकृतिक तंत्रों के अपने आंतरिक मूल्य होते हैं। यदि मानव जाति को जीवित रहना है तो पर्यावरण को भी बचाने की आवश्यकता है। प्रकृति और पर्यावरण को ऋग्वेदीय अवधि के समय से ही महत्व दिया गया है। "आकाश एक पिता के समान, पृथ्वी मां के समान एवं अंतरिक्ष बेटे के तुल्य है।"

मनुष्य के साथ पृथ्वी के जैवमंडल में निवास करने वाले विभिन्न जीव-जंतु, पेड़-पौधे भी इस समाज का हिस्सा है।

पर्यावरण संतुलन और नैतिक जागरूकता

डॉ. मणिमाला शर्मा

पर्यावरणीय नैतिकता के माध्यम से मनुष्य अपने साथ-साथ जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों और प्रकृति की हर वस्तु का ध्यान रखते हैं अर्थात् नैतिक आधार और मूल्यों के साथ (मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण और विनाश न करके) जिम्मेदारी से प्रकृति का उपयोग कर रहे हैं; क्योंकि पृथ्वी पर उपस्थित सभी जीवों को जीवन जीने का अधिकार प्राप्त है। प्रकृति को नष्ट करके हम जीवों के जीवन जीने के अधिकार को अस्वीकृत कर देते हैं। पर्यावरण नैतिकता के वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के लिए नैतिक औचित्य और नैतिक प्रेरणा प्रदान करता है। मनुष्य की आर्थिक गतिविधियों के कारण पर्यावरण प्रदूषित हुआ है; जो पर्यावरण संतुलन और जैव विविधता के लिए खतरा है अतः मनुष्य का कर्तव्य है कि प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन ना करें।

औद्योगिक गतिविधियों के संचालन के समय ध्यान रखा जाए कि कम से कम पर्यावरण क्षति हो; जिसके लिए हरित तकनीक का प्रयोग करना, अपशिष्टों का समुचित उपचार करना, वृक्षारोपण करना आदि कार्य किए जाएं।

पर्यावरणीय मूल्यों का महत्व इसलिए है क्योंकि पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकता है, जैव विविधता के ह्रास को रोकने में उपयोगी है, पर्यावरणीय समस्याओं (जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत क्षरण) को काबू में रखने में उपयोगी है, पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित रखने में उपयोगी है।

पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरणीय पर्यटन, दंड और पुरस्कार आदि द्वारा पर्यावरणीय मूल्यों को बढ़ावा दिया जा सकता है। मानव जीवन एवं संस्कृति की समृद्धि के लिए जनसंख्या को नियंत्रित करना भी आवश्यक है। गैर मानव जीवन की समृद्धि के लिए भी जनसंख्या में कमी करने की आवश्यकता है। आर्थिक और सामाजिक नीतियों में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग को रोककर संतुलन स्थापित स्थापित करने तथा पर्यावरण संरक्षण की पारंपरिक गतिविधियों को व्यवहार में लाने की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को देवतुल्य स्थान दिया गया है। मनुष्य पांच तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से मिलकर बना है। भारतीय संस्कृति में मानव और प्रकृति के बीच अटूट रिश्ता माना गया है, जो कि वैज्ञानिक आधार पर किया गया है, हमारे शास्त्रों में पेड़-पौधे-पुष्प, पहाड़-झरने, पशु-पक्षी, नदी-सरोवर, वन-मिट्टी-घाटियाँ, जंगली जानवर सभी पूज्य हैं। पर्यावरण का संरक्षण करना हमारा नैतिक दायित्व है क्योंकि संरक्षण करना अपने आप को जीवन देना है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जिस मनुष्य को आध्यात्मिक अनुभूति हो जाती है तो वह अल्प साधनों में अपने हितों की पूर्ति कर सकता है। जब मनुष्य नैतिक मूल्य को समझ अनुशासन से नियम बद्ध हो तभी उसकी भौतिकता वादी प्रकृति पर अंकुश लग सकता है। हमारी प्राचीन संस्कृति में वट, पीपल, नीम, आम के पेड़ों, केले तथा तुलसी के पौधे की पूजा तथा गाय, कुत्ता, चिड़ियों तथा कोवों आदि को भोजन खिलाना हमारी जीवंतता का द्योतक है।

विज्ञान और अध्यात्म में एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। वैज्ञानिक तरीके से भौतिक सुखों को प्राप्त करने में सहयोग तो मिलता है परंतु अध्यात्म के मार्ग से जीवन यापन करने से प्रकृति से सामंजस्य स्थापित होता है, पर्यावरण संतुलन रहता है। यह मार्ग यद्यपि थोड़ा कठिन है परंतु सुखद है। हमारी संस्कृति समृद्धिशीली है और पर्यावरण संरक्षण में नियमबद्ध सूत्र प्रदान करती है जिसमें संकीर्णता का कोई स्थान नहीं है।

प्रकृति एक नियमबद्धता से कार्य करती है और जब उसकी क्रिया से छेड़खानी करते हैं तो उसका संतुलन बिगड़ जाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कारण पर्यावरण के विविध अंगों जल-थल-वायु के भौतिक-रासायनिक-जैविक गुणों में हानिकारक परिवर्तन किया है; प्रदूषण बढ़ गया है। विकसित और विकासशील देशों के समक्ष 'ग्रीन हाउस प्रभाव' की समस्या मुंह बाए खड़ी है।

भारतीय प्रबंध संस्थान बेंगलूर के प्रोफेसर जे. वंदोपाध्याय की रिपोर्ट के अनुसार षडदानों का सबसे बुरा असर है

पर्यावरण संतुलन और नैतिक जागरूकता

डॉ. मणिमाला शर्मा

यहां के जल संसाधनों पर तथा प्राकृतिक वातावरण पर हुआ है। 'असावधानीपूर्वक खनन ने एक ओर तो आसपास की जमीन को बंजर बनाया है दूसरी ओर पानी – जंगल – हवा सभी को दूषित किया है। इसी संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र ग्रुप ने अपनी रिपोर्ट में कहा है।' इसमें कोई संदेह की गुंजाइश नहीं कि संसाधनों की कमी और पारिस्थितिक दबाव भविष्य में मानव और देशों के कल्याण के लिए वास्तविक खतरे हैं।

मानवता के कल्याण के लिए पर्यावरण का संरक्षण और सुधार आवश्यक है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में विकसित और संपन्न पश्चिमी राष्ट्रों में पर्यावरण संरक्षण के लिए कुछ समूह का उदय हुआ। ये प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन और विनाश की चिंता के साथ मानवता के अस्तित्व और जीवन की गुणवत्ता पर केंद्रित थे।

1972 में स्टॉकहोम में मानवीय पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन हुआ जिसमें देशों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन का उद्देश्य प्रदूषण की रोकथाम

के साथ प्राकृतिक संसाधनों और वन्यजीवों के संरक्षण के लिए एक विश्वव्यापी 13 अभियान की ओर ध्यान आकर्षित करना था। विकसित विकासशील देशों में मतभेदों के बावजूद सकारात्मक परिणाम दिखें और विकास, संसाधनों के प्रबंधन और नियोजन के समय पर्यावरण को ध्यान में रखकर कार्य योजना का निर्माण हुआ। विश्व पर्यावरण दिवस का सुझाव भी इस समय दिया गया और 5 जून 1973 से इसे मनाना भी शुरू कर दिया गया। इसमें प्रतिवर्ष 143 से अधिक देश भाग लेते हैं और प्रकृति रक्षा हेतु जागरूकता बढ़ाने हेतु विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों पर बात करते हैं। इसमें पर्यावरण संरक्षण हेतु व्यक्तियों, उद्यमियों, विभिन्न समुदायों द्वारा नीतियों तथा विकल्पों में जिम्मेदारी पूर्वक बदलाव का आह्वान किया जाता है, जिससे प्रकृति के साथ सामंजस्यता में जीवन जिया जा सके।

इस वर्ष पर्यावरण दिवस के लिए थीम रखी गई "only one Earth & living sustainably in Harmony with Nature" UNEP की रिपोर्ट के अनुसार विश्व आबादी 8 अरब की ओर अग्रसर है और पारिस्थितिकी तंत्र हमारी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पा रहा है और इसमें गिरावट आ रही है।

जब हम पर्यावरण आंदोलनों की बात करते हैं तो हम देखते हैं कि सामाजिक आंदोलनों के ही एक प्रकार है जो पर्यावरण नीतियों और प्रथाओं में बदलाव लाने के लिए कार्य करते हैं। यह आंदोलन विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का विकल्प भी पेश करते हैं पर्यावरण आंदोलन विकास के विरोधी नहीं है, यह तो पर्यावरण संरक्षण के साथ विकास करने तथा विकास परियोजनाओं को सामाजिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित करने का समर्थन करते हैं।

1. चिपको आंदोलन:— यह एक वन संरक्षण का आंदोलन था जो 1970 में उत्तराखंड में शुरू हुआ था। हिमालयी जंगलों में हरियाली, पश्चिमी घाटों और विंध्य में भी प्राकृतिक संसाधनों के लिए दबाव बनाया।

2. अप्पीको आंदोलन:— यह कर्नाटक के पश्चिमी घाट में शुरू हुआ इस आंदोलन ने एक नारा दिया उलीसू, बेलासू और बालसू। यानी जंगल बचाओ, पेड़ लगाओ और उनका किफायत से इस्तेमाल करो।

3. साइलेंट घाटी आंदोलन:— केरल की शांत घाटी घनी जैव विविधता के लिए मशहूर है। यहां 1980 में कुंतीपूझ नदी पर कुंदेरमुख परियोजना के अंतर्गत 2000 मेगावाट बिजली निर्माण हेतु बांध का प्रस्ताव रखा गया। परंतु वैज्ञानिकों, पर्यावरण कार्यकर्ताओं तथा क्षेत्रीय लोगों का मानना था कि इससे क्षेत्र के फूलों, पौधों तथा लुप्त होने वाले प्रजातियों तथा संतुलित पारिस्थितिकी को खतरा है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस विवाद में मध्यस्थता की और राज्य सरकार को इस परियोजना को स्थगित करना पड़ा।

4. बिश्नोई आंदोलन: — बिश्नोई संप्रदाय के संस्थापक जांभोजी द्वारा अपने अनुयायियों को 29 नियम दिए गए

पर्यावरण संतुलन और नैतिक जागरूकता

डॉ. मणिमाला शर्मा

विश्वोई समाज के लोग पेड़ों की पूजा करते हैं, 1730 में जोधपुर के राजा अभय सिंह ने महल बनवाने के लिए सैनिकों को लकड़ियों का इंतजाम करने हेतु भेजा। राजस्थान के खेजड़ी गांव में सबसे पहले अमृता देवी पेड़ से लिपट गई उन्हें देखकर और भी महिलाएं पेड़ से लिपट गईं और उनको अपनी जान गंवानी पड़ी। तत्पश्चात महाराजा ने सभी विश्वोई गांवों में पेड़ों की कटाई रोकने हेतु शाही फरमान दिया।

5. नर्मदा बचाओ आंदोलन:- इस आंदोलन का उद्देश्य बांध को रोककर पर्यावरण विनाश तथा लोगों के विस्थापन को रोकना था। जिसमें समाजसेवियों, पर्यावरणविदों, छात्रों, महिलाओं, आदिवासियों, किसानों तथा मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की सक्रिय भूमिका रही।

दैनिक जीवन के कुछ आसान बदलावों से पर्यावरण की सुरक्षा की दिशा में सकारात्मक प्रयास किए जा सकते हैं।-

1. दैनिक आवागमन हेतु साइकिल या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना।
2. सड़कों पर सफाई का जिम्मेदारी पूर्वक ध्यान रखना।
3. प्लास्टिक वस्तुओं के उपयोग से दूरी रखना।
4. घर ऑफिस सार्वजनिक स्थान पर अनावश्यक पंखे लाइट बंद करके बिजली बचाना। हीटर और एयर कंडीशनर के प्रयोग से बचना।
5. कपड़े, जूट या कागज का शॉपिंग बैग इस्तेमाल करना। प्लास्टिक बैग प्रयोग से बचना।
6. शावर की वजह बाल्टी भर का नहाना।
7. अधिकाधिक वृक्षारोपण करना।
8. अधिकाधिक पर्यावरण जागरूकता हेतु लोगों को शिक्षित करना।
9. रसोई में सब्जियों आदि के धोने से बचे पानी को बगीचे में इस्तेमाल करना।
10. घर में गीले और सूखे कचरे का अलग-अलग कचरा पात्र रखना और गीला कचरा का प्रयोग बगीचे में खाद के रूप में करना।
11. ऑर्गेनिक खाद, गोबर खाद या जैविक खाद का उपयोग करना।
12. कोयले से चलने वाले पावर प्लांट को बंद करना।
13. नदी तालाब में नहाने, कपड़े -धोने पर प्रतिबंध।
14. शहरों के अंदर गंदे पानी के निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
15. कचरे को गाढ़ना, जलाना नहीं।
16. बर्थडे पार्टी, विवाह आदि अवसरों पर पौधों का उपहार देना।

सारांशतः

वनस्पतियों, प्राणियों और मानव सहित समस्त सजीवों तथा भौतिक परिसर सभी का कल्याण पर्यावरण के अंतर्गत आता है। प्रगति की दौड़ में अंधा हुआ मनुष्य अपने सुख सुविधाओं के लिए कुछ भी करने में संकोच नहीं करता है। जैव विविधता संरक्षण हेतु जब तक जनता जागरूक नहीं होगी तब तक सफलता मिलना संभव नहीं। जल संसाधन सुरक्षा, खनिज संसाधन सुरक्षा, वन विनाश की समस्या से निपटना, विषाक्त धुआं विसर्जित करने वाले वाहनों की

पर्यावरण संतुलन और नैतिक जागरूकता

डॉ. मणिमाला शर्मा

रोकथाम करके, जहरीले अपशिष्टों के लिए पर्यावरण संतुलन प्रावधान की व्यवस्था करना, पर्यावरण जागरूकता को वैश्विक रूप देना, पर्यावरण सुरक्षा संबंधी नियम कानूनों का सख्ती से पालन करना।

उक्त परामर्शों को जब व्यक्ति अपनी सोच में धारण करेगा और उसी के अनुसार आचरण करेगा, अभ्यास करेगा तभी वास्तविक सफलता अर्जित होगी।

इसी आह्वान के साथ..... एक शायर का कथन है –

“भले शजर ना सही सिर्फ घास रहने दो।
जमीं के जिस्म पर कुछ तो लिबास रहने दो।”

*सहायक आचार्य
दर्शनशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय, रोहट (पाली)

संदर्भ—

1. 'पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती है हमारे भारतीय परंपराएं' 20 जुलाई 2019
2. ऋग्वेद
3. 'भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण' डॉ. राजेश कुमार शर्मा
4. 'पर्यावरण जागरूकता में शिक्षक की भूमिका' प्रदीप चावला, 30.10.18

पर्यावरण संतुलन और नैतिक जागरूकता

डॉ. मणिमाला शर्मा